ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO. 151-153
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

मूल्य परक अध्यापक शिक्षा (VALUE ORIENTED TEACHER EDUCATION)

प्रमोद कुमार चौरसिया

शोध अध्येता– शिक्षा शास्त्र संकाय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

सारांश : *शिक्षा द्वारा प्रत्येक सामान्य व्यक्ति एक अच्छे व नेक आदमी को विकसित हुआ देखना चाहता है। यही उद्देश्य समस्त शैक्षिक प्रतिक्रियाओं का प्राण है, आधार है व मार्गदर्शक कथन है। यह बात आदिकाल से निरन्तर कहीं जाती रही है। परन्तु विस्मरण में निपुण मानव इन्हें भूलता व समय–समय पर याद करता रहा है। कार्टर वी० गुड ने शिक्षा की परिभाषा देते हुए कहा है कि शिक्षा उन सभी क्रियाओं की समष्टि है जिनसे व्यक्ति अपनी योग्यताओं, अभिवृत्तियों व समाज के सकारात्मक मूल्यों के व्यवहार प्रतिमान विकसित करता है। शिक्षा आयोग(1964–66) ने अपने प्रतिवेदन में कहा है– "विद्यालय शिक्षाक्रम में एक गंभीर दोष यह है कि उसमें सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा की व्यवस्था की कमी है। "शिक्षा की चुनौती नामक दस्तावेज में कहा गया है कि "सुसंगत तथा व्यवहार्य मूल्य प्रणाली को ऐसी प्रतिक्रियाओं के माध्यम से लागु किया जाए जो जीवन के प्रति तर्कसंगत वैज्ञानिक और नैतिक दृ ष्टिकोण पर आधारित हो।" मूल्य–शिक्षा सम्बन्धी प्रत्येक योजना का सफल क्रियान्वयन शिक्षकों के वैयक्तिक व्यवहार, शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं व कार्यनिष्ठा पर निर्भर करता है। अपने शिष्यों के कल्याण के लिए पूर्णतः कटिबद्ध, परिश्रमी व सृजनशील शिक्षकों में शिक्षा प्रणाली में व्याप्त असन्तोष व नगण्य लाभों के बावजूद अपने दायित्वों को समर्पण भाव से निभाया है। दुर्भाग्यवश अनुपयुक्त शिक्षकों के कारण हमारा शिक्षा तंत्र पंगु हो गया है। यह स्थिति खतरनाक है शिक्षकों को मूल्यपरक शिक्षा के संचालनार्थ सक्षम होना चाहिए। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दस्तावेज में पर्यावरण संरक्षण, छोटा परिवार, नारी सम्मान, सामाजिक न्याय, धर्म–निरपेक्षता व राष्ट्रीय चेतना के विकास पर बल दिया है।*

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ओड (1988) की मान्यता है कि शिक्षकों को स्वयं के लिए मूल्यों का निध ारिण करना होगा, उन्हें इन मूल्यों के सम्बन्ध में स्वयं सचेष्ट और सक्रिय रहना होगा, शिक्षण प्रशिक्षण की अवधि में मूल्यों से व अपनी संस्कृति से परिचित होना होगा, मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता विकसित करनी होगी तथा मूल्यों के शिक्षण हेतु निश्चित शिक्षण संव्यूहन खोजने होंगे। सुयोग्य भावी शिक्षक तैयार करने का दायित्व शिक्षक संस्थानोंधविभागों का है व भावी शिक्षकों की तैयारी के समय मूल्यपरक शिक्षा के सैद्धान्तिक, क्रियात्मक व शोध पक्ष पर विशेष ध्यान देना अपेक्षित है। छब्ज के अध्यापक शिक्षा के कतिपय विशिष्ट मुद्दे एवं सन्दर्भ नामक परिचर्चा दस्तावेज (2004) में कहा है "मूल्य आत्मसातीकरण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य बन गया है और अध्यापको को यह उत्तरदायित्व वहन करना है तथा हमारी मिश्रित संस्कृ ति व आधुनिकता के मूल्यों के मध्य संश्लेषण
करना है।"

अध्यापक शिक्षा : वर्तमान स्थिति व् मूल्य– कुशल तथा प्रभावी शिक्षकों को तैयार करने की जिम्मेदारी मुख्य रूप से अध्यापक शिक्षा संस्थाओं पर है। शिक्षक–प्रशिक्षक छात्राध्यापकों के मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। बाकर मेंहदी (1987) के अनुसार– "शिक्षा के दर्शन, समाज शास्त्र तथा मनोविज्ञान का परम्परागत शिक्षण शिक्षक–प्रशिक्षक तथा छात्राध्यापक के समय व ऊर्जा की मात्र बर्बादी है। शिक्षण अभ्यास भी एक प्रकार की यांत्रिक संक्रिया के रूप में जारी है जिसमें (1)पुराने हरबार्ट के सोपानों पर आधारित पठायोजनाओं का निर्माण किया जाता है। (2) कम संख्या में पाठों को पढ़ाया जाता है व इनमें से अनेक का पूरी तरह पर्यवेक्षण भी नहीं होता है तथा (3) आनुष्ठानिक ढंग से दृश्य श्रव्य, सहायक सामग्री किया जाता है।" इन शिक्षक शिक्षा की कमियों के आधार पर हमें यह धारणा नहीं बननी चाहिए कि देश में उच्च कोटि की मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा संस्थाएँ स्वयं पहल करके व अपने नये कार्यक्रमों के माध्यम से भावी शिक्षाओं में जीवन व कार्य से सम्बन्धित उपयुक्त मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करती है। हमें ऐसी प्रभावी संस्थाओं के उपयोगी कार्यक्रमों का अनुसरण करना चाहिए। गुणवत्ता, प्रवीणता तथा चरित्र अध्यापक शिक्षा की तीन आधारभूत विमायें है। कौल (1990) तथा छम्ब (1986) के प्रभावी कार्यक्रमों को अपनाकर हमारे अध्यापक शिक्षक तथा छात्राध्यापक अध्यापक शिक्षा केन्द्रों में मूल्य अभिमुख वातावरण सृजित कर लाभप्रद अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

NEP (1986) तथा मूल्य परक अध्यापक शिक्षा– NEP(1986) में चुनी हुई प्रशिक्षण संस्थाओं को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (CTE) तथा शिक्षा में उच्च अध्ययन संस्थान (IASE) को विकसित करने की गई थी इस दिशा में धीमी गति से कार्य हो रहा है। देश में पहली बार स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए "ओरिएन्टेशन तथा रेफ्रेशर कोर्स" चलाने की संस्थागत योजना शुरू की गई है तथा "एकेडेमिक स्टाफ कॉलेजों" की स्थापना

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

की गई है। NEP(1986) की निम्न बातों से ऐसा प्रतीत होता है कि मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा की सम्भावनाएँ उज्जवल हैं –

1. शिक्षकों के चयन के तरीकों को इस प्रकार पुनर्गठित किया जाएगा कि योग्यता व वस्तुनिष्ठता सुनिश्चित हो सकें।
2. निम्न स्तरीय अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं को समाप्त कर दिया जायेगा।
3. NCTE को अध्यापक शिक्षा संस्थाओं को मान्यता देने का अधिकार दिया जायेगा तथा उसे आवश्यक साधन उपलब्ध कराये जायेंगे वह पाठ्यचर्चा व विधियों के बारे में निर्देश प्रदान करेगी।

NEP(1986) की कार्य योजना में कहा गया है– नई नीति के प्रतिबलों के सन्दर्भ में अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्चा को सुधारने की जरुरत है। मुख्य रूप से शिक्षा तथा संस्कृति के समाकलन, कार्य, अनुभव, शारीरिक शिक्षा तथा खेल कूद, भारतीय संस्कृति के अध्ययन तथा भारत की एकता व समाकलन विषयक समस्याओं पर बल दिया जाना चाहिए। यह भी माना गया है कि " शैक्षिक प्रौद्योगिकी न केवल शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की विधियों वरन् उसकी विषय वस्तु व् रूप रेखा को भी प्रभावित करेगी। पाठ्य पुस्तकों में पाश्चात्य विचारों पर अत्यधिक बल दिया गया है तथा प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षकों को शिक्षा की भारतीय दार्शनिक व मनोवैज्ञानिक संकल्पनाओं की पर्याप्त जानकारी नहीं हो पाती है। अतः NCERT तथा UGC को नई अधिगम सामग्रियों को तैयार करने का काम अपने हाथ में लेना चाहिए। ये अधिगम सामग्रियाँ जैसे– पाठ्य–पुस्तकें, सन्दर्भ पुस्तकें, हैण्डबुक्स स्लाइड, टेप व फिल्म आदि ऐसी होनी चाहिए जिनसे शिक्षा में भारतीय अनुभवों का दिग्दर्शन हो।

मूल्परक अध्यापक शिक्षा का पाठ्क्रम– अध्यापक शिक्षा के मानवीय पक्ष पर बल दिया जाना चाहिए रमाशंकर शुक्ल(1989) का कहना है कि शिक्षक शिक्षा के माध्यम से यह प्रयास किया जाना चाहिए कि विद्यार्थियों के मस्तिष्क में राष्ट्रीय चेतना का सुदृढ़ आधार बन जाए और उनके मानस पटल पर से धीरे–धीरे प्रान्तीयता, जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद आदि के संकीर्ण विचारों का प्रभाव समाप्त हो जाए। " National Curiculum for Teacher Education a Framework(1989) में उल्लेखनीय है कि शैक्षिक, सुधार का एक प्रमुख निवेष यह है कि शिक्षा को सामजिक तथा नैतिक मूल्यों के संवर्हन का एक सबल उपकरण बनाया जाए। शिक्षा के मूल्य अभिमुखीकरण के अध्यापक शिक्षा हेतु निहितार्थो को साक्धानी पूर्वक ज्ञात करना चाहिए। यह सुस्पष्ट है कि अध्यापक शिक्षा के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में मूल्यों के विकास के प्रति दिलचस्पी व्याप्त होनी चाहिए। इसके लिए अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम को पुनः अभिविन्यासित करके मूल्यों के विकास के लिए एक संस्थागत लोकाचार उत्पन्न करना होगा।

अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा के फ्रेमवर्क (1989) में यह माना गया है कि अध्यापक शिक्षा निश्चित रूप से किसी व्यक्ति को शिक्षण व्यवसाय में भेजने की तैयारी कराने का कार्यक्रम है तथा इसमें व्यापक प्रोफेशनल ज्ञान, मूल्यों व कौशलों के अधिगम हेतु व्यवस्था होनी चाहिए। इसका कार्यात्मक अभिविन्यास सुदृढ़ होनी चाहिए। फ्रेमवर्क के अनुसार, सम्पूर्ण कार्यक्रम के चार प्रमुख अवयव निम्न हैं।

(अ) फाउण्डेशन कोर्स – इसमें दो कोर्स होनी चाहिए। पहले कोर्स में विद्यार्थी के सामने शिक्षा, सामाजिक संरचना तथा शिक्षकों की भूमिका की समाकलित समझ प्रस्तुत की जानी चाहिए। इसे Education in emerging India का नाम दिया जा सकता है। दूसरे कोर्स को मनोविज्ञान पर आधारित होना चाहिए तथा इसमें संदर्भित अवस्था के विद्यार्थियों की प्रकृति व उनके विकास, अवस्था के लिए प्रासंगिक अधिगम के विभिन्न प्रकारों, वैयक्तिक भिन्नताओं तथा समायोजन के मनोविज्ञान पर मुख्य देना चाहिए। इस कोर्स को शिक्षा मनोविज्ञान कहा गया है।

(ब) अवस्था प्रासंगिक विशिष्टीकरण– इसके दो अवयव होने चाहिए। प्रथम अवयव में अवस्था विशेष के लिए विशिष्ट उद्देश्यों व शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रविधियों व भिन्न विद्यालय विषयों को पढ़ाने के लिए शिक्षण संव्यहनों से सम्बन्धि विशिष्ट अधिगमों पर बल दिया जाता है। अब तक इसे "कन्टेन्ट कम मेथोडोलॉजी" नाम दिया जाता है।

(स) अतिरिक्त विशिष्टीकरण– इसके अंतर्गत शारीरिक शिक्षा स्वास्थ्य शिक्षा छात्रों में अतिरिक्त विशिष्टीकरण का प्रावधान किया जाता है।

(द) प्रायोगिक क्षेत्रीय अनुभव– अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या का यह अवयव अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रोफेशनल प्रवीणता के विकास के केन्द्रीय उद्देश्य की पूर्ति से सम्बन्धित है।

मूल्य अभिविन्यास की आवश्यकता की दृष्टि से अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की समीक्षा करने के लिए श्री किरीट जोशी की अध्यक्षता में गठित कार्यकारी समूह ने 1883 में मूल्परक अध्यापक शिक्षा हेतु सम्भव कार्यक्रम की रुपरेखा तैयार

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

की थी जिसे सम्पूर्ण अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का अभिन्न अंग माना जा सकता है। यह निम्न थी –

1. दर्शन शिक्षा तथा मूल्य, 2. मनोविज्ञान, शिक्षा तथा मूल्य, 3. विज्ञान तथा मूल्य, 4. दर्शन तथा मूल्य, 5. धर्म, आध्यात्मिकता तथा मूल्य, 6. कला तथा मूल्य, 7. पर्यावरण तथा मूल्य, 8. समुदाय सेवा, साहस तथा बहादुर के कार्य, 9. भौतिक संस्कृति तथा उसके मूल्य, 10. सत्य, सुन्दरता व अच्छाई के अनुसरण को प्रेरित करने वाली चयनित कहानियाँ, नाटक तथा साहित्य के अंश।

रा०अ०शि०प० के परिचर्चा दस्तावेज (2004) में मनुष्य लिए अपनी इक्छाओं और प्रलोभनों को सन्तुलित सीमा में रखने और उच्च मूल्यों की खोज के लिए अन्वेषण की आवश्यकता महसूस की गई है। यह मन गया है कि अध्यापक शिक्षा को संवैधानिक लक्ष्यों को साकार करने की क्षमता विकसित करना, भावी शिक्षकों को वैज्ञानिक एवं उचित विचार क्षमता का परिष्करण, मूल्य निर्णयन क्षमता एवं मूल्य अभिमुखी क्रियान्वित विकसित करना, जैसे उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास करना चाहिए। इसमें सामुदाहिक सहयोग उत्पन्न करने, मूल्य आत्मसातीकरण व देश भक्ति की भावना के संपोषण हेतु तैयार करने जैसे अध्यापक शिक्षा के उद्देश्यों को भी स्वीकार किया गया है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि देश के भावी कर्णधारों को सर्वोत्तम प्रकार की शिक्षा प्रदान करने के लिए मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा अपरिहार्य है। अध्यापक शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद्, अध्यापक, शिक्षकों व अध्यापक शिक्षा की प्रभावी योना के निर्माण व क्रियान्वयन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। यदि हम ऐसी शिक्षा की सेवा पूर्व अथवा सेवा कालीन व्यवस्था करने में सफल हो जाए तो हम यह आशा कर सकते है कि भारत का भविष्य मूल्यों में आस्था रखने वाले के हाथों में सुरक्षित रहेगा।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने 2003 में प्रैक्टिकल, वैल्यू एजुकेशन पर एक सीढ़ी जारी की है। इससे विद्यार्थियों व शिक्षकों के चिन्तन व अभिवृत्तियों में पर्याप्त रूपान्तरण की आशा की जा सकती है परन्तु मूल्य विमुख परिवेश स्ववत्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थाओं की लाभ–अभिमुख व्यवस्था व संसाधन हीनता की दशाओं में इनसे मूल्यों का विकास कैसे सम्भव होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय, रामशकल : मूल्य शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2008.
2. Govt- of India, Ministry of Education- Chal lenge of Edu - Policy Perspective, New Delhi, 1985.
3. कोठारी, दौलत सिंह : शिक्षा आयोग, 1964–66
4. विहारीलाल, रमन : शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ17 वॉ संस्करण, 2009.
5. मोहन मदन, गुप्ता एवं पाल : शिक्षा और समाज, कैलाश पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 2010 .

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14